UGC Approved Journal
Sr. No. 64310

ISSN 2319-8648

Indexed (IIJIF)

Impact Factor - 2.143

Current Global Reviewer

UGC Approved International Refereed Research Journal Registered & Recognized
Higher Education For All Subjects & All Languages

Special Issue

Issue I, Vol I 10th February 2018

Editor in Chief
Mr.Arun B. Godam

www.rjournals.co.in

16	इक्कीसवी सदी के हिन्दी काव्य में बाजारवाद	स.प्रा.मुजावर एस.टी.	42
17	वैश्वीकरण के दौर में बदलते पारिवारिक मूल्य विशेष संदर्भ - आपका बंटी : मन्नू भंडारी	प्रा. डॉ. चित्रा धागणे	45
18	"वैश्वीकरण तथा अनुवाद"	डॉ. पवार विक्रमसिंह विजयसिंह	48
19	'वैश्विकरण के परिप्रेक्ष्य में हिंदी साहित्य के अंतर्गत प्रस्तुत शोधालेख' "डॉ.शंकर शेष का हिन्दी नाटक साहित्य में योगदान"	प्रा.संजय व्यंकटराव जोशी	51
20	हिन्दी कहानी और वैश्वीकरण	प्रा.विनायक कापावार	54
21	"वैश्विकरण के परिप्रेक्ष्य में हिंदी गज़ल और किसान"	डॉ. मनोजकुमार ठेसर	57
22	मोहनदास नैमिशराय के उपन्यास 'आज बाजार बंद है' में चित्रित वेश्या जीवन	प्रा. अशोक गोविंदराव उघडे	60
23	"विधाओं के लिए कथा एवं पात्रों के चयन का महत्त्व"	प्रा.डॉ. न.पु. काळे	63
24	वैश्वीकरण और स्त्री- विमर्श	सौ.मोहिनी रणजित कुटे	67
25	"बाजारवाद के परिप्रेक्ष्य में काल कोठरी"	प्रा. रामहरी काकडे	70
26	वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में उपन्यासों में विधाओं का सम्मिश्रण	रविंद्र कारभारी साठे	72
27	वैश्विकरण : डॉ. कुसुम कुमार के नाटकों के संदर्भ में	डॉ. सविता कचरू लोंढे	75
28	वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में हिन्दी कविता	संतोष नागरे	78
29	वैश्वीकरण और बाजारवाद	भोई बनसिंग	82
30	"वैश्वीकरण के अंधकार में हिंदी का घटता स्तर"	रुबीना शमीम खान	83
31	वैश्विकरण के दौर में हिन्दी भाषा का स्थान	शेख अब्दुल बारी अब्दुल करीम	86
32	जागतिकीकरण और हिंदी उपन्यासों में आदिवासी चिंतन	डॉ.शेख अफरोज फातेमा सय्यद टिपुसुलतान सय्यदनुर	88

ISSN : 2319 – 8648 **CURRENT GLOBAL REVIEWER** Impact Factor : 2.143 SPECIAL ISSUE Issue I, Vol I, 10th Feb. 2018

'वैश्विकरण के परिप्रेक्ष्य में हिंदी साहित्य के अंतर्गत प्रस्तुत शोधालेख'

''डॉ.शंकर शेष का हिन्दी नाटक साहित्य में योगदान''

प्रा.संजय व्यंकटराव जोशी

हिन्दी विभाग , व्यंकटेश महाजन वरिष्ठ महाविद्यालय, उस्मानाबाद

----------(19)----------

वैश्विकस्तर में हिन्दी साहित्य की महत्वूपर्ण भूमिका है। आज हिन्दी भाषा ने अंतरराष्ट्रीय स्तरपर अपना मजबूती से कदम आगे बढाया है। हर देश में इस भाषा और इसके साहित्य को पढनेवालों की संख्या विद्यमान है और यह संख्या दिनोंदिन बढती ही जा रही है। जिसके कारण साहित्य की विभिन्न विधाओं के माध्यम से साहित्यकारों का लेखन बढता जारहा है। कुछ मौलिक साहित्यकार तो हिन्दी की धरोहर ही रहे है। जिनके लेखन के योगदान से हिन्दी का साहित्य आज भी समृध्द माना जाता है। इनकी लंबी श्रृंखला रही है। यह शुरूवात तो भरतेन्दु हरिश्चंद्र से है। लेकिन साठोत्तरी दशकों में मोहन राकेश, लक्ष्मीनारायण लाल, जगदिशचंद्र माथुर जैसे ज्येष्ठ नाट्य रचनाकारों के साथ डॉ.शंकर शेष मौलिक है। इनका हिन्दी नाटक और रंगमंच के लिए विशेष योगदान रहा है। इनके नाटकों का संक्षिप्त परिचय हम यहाँ देख सकते है।

'डॉ.शंकर शेष' को भी रचना दृष्टि विरासत में ही मिल गई थी प्राथमिक शिक्षा अवस्था में ही साहित्य में अभिरुचि दिखाने को इन्होंने आरंभ किया था संगीत, नाटक की चर्चा, घर का सुसंस्कृत वातावरण आदि के कारण कविता की उम्र में आते ही उन्होंने तुकबंदी आरंभ कर दी कभी कहानी से भी हाथ आजमा लेने लगे दिनोंदिन इनका रुझान साहित्य की ओर बढता गया उच्चशिक्षा के लिए नागपूर में 'मारिस कॉलेज' में दाखिल हुए इन दिनो इनकी छुटपुट रचनाये विभिन्न पत्रिकाओं मे प्रकाशित होने लगी थी इनका लेखकीय आत्मबल बढने लगा पद्य की ओर से मुंह फेर गद्य की रचनाएँ आरंभ की इसी समय 'डॉ.विनय मोहन शर्मा' जैसे गुरू का मार्गदर्शन मिला और लेखन को नये आयाम प्राप्त हुए।

'डॉ.शेष' के साहित्य विकासक्रम में कविता, कहानी आदी का पत्र-पत्रिकाओं मे लेखन तथा आकाशवाणी के सम्पर्क के कारण उनके अनेक दोस्त एवं अध्यापक उन्हें देखने लगे उनके लिखे रिडियो रुपक चर्चा का विषय बन गये थे उनके सहपाठीयों ने उन्हे लेखक की संज्ञा से अभिहित किया लेखक के साथ नाटककार लिखवा देने का सारा श्रेय भी इसी कॉलेज को जाता है।

'डॉ.शंकर शेष' के हर नाटक की विशेषता रही है। जिसका विश्लेषण करना जरुरी है। **'मुर्तिकार'** नाटक से लेकर **'आधीरात के बाद'** तक साथ ही अन्य विधाओं का भी विशेष रुप में जिक्र किया जाता है। उनका आरंभिक दिनों का नाटक 'मुर्तिकार' (१९५५) उनका पहला नाटक है। महाविद्यालय के गैदरिंग में खेला गया और काफी सफल सिध्द हुआ 'मुर्तिकार' से शुरू हुई उनकी यह नाट्य यात्रा निरंतर गतिशील होती चली गयी इसी नाटक को 'श्रीनगर' में सम्पन्न एक नाटक प्रतियोगिता में सफलता से खेला गया प्रतियोगिता में प्रस्तुत इस नाटक ने प्रथम स्थान प्राप्त किया था और इनके नाटकों का सिलसिला जारी हो गया प्रेरणा वृध्दिंगत होती गयी कलम को गति मिली और एक के बाद एक सुंदर नाटकों का सृजन होने लगा। 'मुर्तिकार' नाटक में स्त्री-पुरूष के बीच लगाव और तनाव का चित्रण है। दुसरे स्तर पर पारिवारिक समस्या की कथा है। इसमें लेखक स्पष्ट करते है। की भारतवर्ष के लोग कलाकार तथा साहित्यकार को भूखा मारते है। ओर बाद में उनका पुतला बनवाने के लिए हजारों रुपये चंदा जमा करवाते है। यही भारतवर्ष के साहित्यकार और कलाकार की पीडा है। यह इस नाटक में उभरकर आया है। यह शेष का रुपांतर ही तीन अंकी 'मुर्तिकार' नाटक है। 'आर्य बुक डेपो दिल्ली' ने इसका प्रकाशन किया है। इसकी पृष्ठ संख्या ११२ है। 'डॉ.शेष' की दुसरी रचना 'रत्नगर्भा' है इसका रचना काल १९५६ है। इसमें शेष ने प्रेम में मन की अपेक्षा तन को माननेवाले लोगों का चित्रण किया है।

'नई सभ्यता नये नमूने' यह नाट्य रचना भी १९५६ की है। इसमें लेखक ने मिथक पध्दती का प्रयोग किया है। उन्होंने समाकालीन समाजव्यवस्था और चारित्रिक पतन की समस्या को पेश किया **'वेटोंवाला बाप'** इस नाट्यकृति का सृजन सन १९५८ में किया गया इस नाटक की पांडुलिपि खो जाने के कारण इसका प्रकाशन नही हो पाया **'तिल का ताड'** यह नाटक इनका सन १९५८ का है नाटककार ने इसमें हस्य व्यग्यांत्मक शैली का प्रयोग किया है। **'बिन बाती के दिप'** यह इनकी नाट्यकृति १९६८ की है इसमें अधिक महत्वाकांक्षा रखनेवाले आदमी का अद्यपतन को चित्रित किया है। **'बाढ का पानी'** इस नाट्यकृति का रचनाकाल १९६८ का है। इस

नाट्यकृति पर मध्यप्रदेश सरकार का 'सात हजार' रुपये का पुरस्कार भी प्राप्त हुआ था इसमें गांधीवादी दर्शन को व्यक्त किया गया है **'बंधन अपने अपने'** इसकी रचना १९६९ में हुई शिक्षा व्यवस्था में निहित भ्रष्टाचार को लेकर इसकी रचना की गई है।

'खजुराहों का शिल्पी' 'डॉ.शंकर शेष' की यह रचना बहुत ही ख्यातिप्राप्त है। इसका रचनाकाल १९७० का है। नाटककार ने इसमें प्राचीनकाल से संसार में होनेवाले माया और मोक्ष के संघर्ष को नये ढंग से प्रस्तुत करने की कोशिश की है। **'फंदी'** इस नाटक का रचनाकाल १९७१ का है। हिंदी नाटक के भीतर नाटक का कलात्मक अविष्कार है। **'एक और द्रोणाचार्य'** इस नाट्यकृति की रचना शेष ने १९७१ में की है। इसमें नाटककार ने महाभारत के संदर्भ को आधुनिकता के साथ जोडने का प्रयास किया है। **'कालजयी'** इस नाट्यकृति का रचनाकाल १९७३ का है। लेखक ने इसमें जनता द्वारा परिवर्तन दिखाकर शक्ति को श्रेष्ठ ठहराया है। **'कालजयी'** (मराठी) रचना है। इसका रचनाकाल १९७३ का है। मराठी भाषा में यह लिखा यह हिन्दी का ही रुप है। **'घरौंदा'** इस नाटक का रचनाकाल १९७४ का है। इस नाटक पर फिल्म भी बनी और इस फिल्म पर 'आशीर्वाद' पुरस्कार भी मिला है। मुंबई शहर की घर की समस्या इस नाटक में चित्रित है। **'अरे मयावी सरोवर'** इसका रचनाकाल १९७४ का है। इसमें स्त्री को सीमित करने की पुरूष की साजिश का यथार्थ है। मौलिकता शेष में ऐसी भी थी, की 'गोविन्द निहलानी की फिल्म 'आक्रोश' के कुछ दृश्य जो 'सत्यदेव दुबे' से नही लिखे जा रहे थे शंकर शेष की जादुई कलम से ही निकले थे।

'रक्तबीज' इस नाट्यकृति का रचनाकाल सन १९७६ का है महानगरो में रहनेवाले उच्चमध्यवर्ग के लोगों की मनोवृत्ती का चित्रण इसमें है। **'राक्षस'** सन १९७७ में लिखी यह रचना है। महाभारत के 'बाकासूर राक्षस' के मिथक से संबंधित है। साथ ही मनुष्य के अनेक संघर्ष को भी इसमें बताया है। **'पोस्टर'** इस नाट्यकृति का रचनाकाल १९७७ का है। भूमिहीन किसानों की तडप इस नाटक का प्रमुख स्वर है शोषन के शिकार लोगों का वर्णन इसमें किया गया है। **'चेहरे'** इस नाटक का रचनाकाल १९७८ है इसमें सामाजिक विसंगतियों का चित्रण लेखक ने किया है। **'त्रिकोण का चौथा कोण'** यह नाट्यकृति अप्राप्य है। **'कोमल गांधार'** इस नाटक की रचना १९७९ की है। इसमें महाभारत की गांधारी के माध्यम से स्त्री जीवन पर लिखा यह नाटक है। **'आधीरात के बाद'** डॉ.शंकर शेष की यह अंतीम नाट्यकृति है। इसका रचना काल १९८१ है। इस नाटक के माध्यम से नाटककार ने समाज में रहनेवाले प्रतिष्ठित लोगों की क्रुर प्रवृत्ती का पर्दाफाश किया है।

उपर्युक्त नाट्यकृति के अलावा 'डॉ.शंकर शेष' ने एकांकी नाटकों का भी सृजन किया है। इनमें 'विवाह मंडप', इसका रचनाकाल सन १९५७ का है। यह उनकी अप्रकाशित रचना है। **'हिन्दी का भूत'** इसका रचनाकाल सन १९५८ है। यह रचना भी उनकी उपलब्ध नही है। बाद में 'डॉ.विनय' के द्वारा प्रकाशित हुई। **'त्रिभूज का चौथा कोण'** डॉ.शंकर शेष ने यह रचना सन १९७१ में की यह भी अप्राप्य है। **'एक प्याला कॉफी'** (इंग्रजी प्ले) इसका रचनाकाल सन १९७९ है। इसमें शेष ने अमीर परिवारों की कृत्रिम जिंदगी को उभारने की कोशिश की है। 'पुलिया' एकांकी में सरकारी दफ्तरों मे होनेवाले भ्रष्टाचार का पर्दाफाश किया है। इसकी रचना सन १९८१ में ही हुई है। **'सोपकेस'** (अफसरनामा) इसकी रचना सन १९८१ में हुई है। 'प्रतीक्षा' एकांकी में मकान खोजने का नाटक करके अपने लडके की दस साल पूर्व हुई हत्या की खोज की जाती है।

आठ एकांकी नाटकों के साथ ही **'डॉ.शंकर शेष'** ने कुछ बाल नाटकों का लेखन भी किया है। इसमें **'दर्द का इलाज'** इस बाल नाटक की रचना सन १९७३ में हुई बाल प्रवृत्ती को स्पष्ट करने की चेष्टा इस नाटक में की है। दुसरा बाल नाटक **'मिठाई की चोरी'** है। इसका रचनाकाल सन १९७३ का है। यह बाल नाटक अप्राप्य है। अनुदित साहित्य का लेखन कार्य भी 'डॉ.शंकर शेष' ने किया है। कुछ नाटकों का अनुवाद किया है। **'दुर के दीप'** मराठी के प्रसिध्द साहित्यकार तथा ज्ञानपीठ पुरस्कार विजेता **'श्री.वि.वा.शिरवाडकर'** का मुल मराठी नाटक **'दूर चे दिवे'** का यह हिन्दी अनुवाद है। यह सन १९५९ में किया गार्बो मराठी लेखक श्री.महेश एलकुंचवार लिखित गार्बो नाटक का अनुवाद **'एक और गार्बो'** नाम से किया है यह कार्य सन १९७२ में डॉ.शेष ने किया **'चल मेरे कद्दू ठुम्मक ठुमक'** यह **'अच्चुत वझे'** का मुल मराठी नाटक **'चलरे भोपळ्या टूणूक टूणक'** का हिन्दी अनुवाद है। इनका अनुवाद सन १९७३ में किया गया **'पंचतंत्र'** यह मूल मराठी लेख 'श्री.माधव साखरदंडे' की रचना पंचतंत्र का छायानुवाद है। जिसे 'डॉ.शंकर शेष' ने अपनी मृत्यू के कुछ दिन पहिले पूर्ण किया 'डॉ.शंकर शेष' की साहित्यीक यात्रा में उन्होंने पटकथा का लेखन कार्य भी किया **'घरौंदा, घुटन, दूरियाँ, सुगंध'** 'शंकर शेष' की अनेक पटकथायें अधुरी है। जिसे कोई पूरा नही कर सका उन्ही रचनाओं को पूरा किया जासका जिनका कम से कम नब्बे प्रतिशत लेखन कार्य हो चुका था पटकथा संवाद में **'सोलवा सांवन'** डॉ.शंकर शेष ने लिखा है।

'डॉ.शंकर शेष' का उपन्यास साहित्य में भी योगदान रहा है। 'डॉ.शेष' नाटक का सृजन करते थे यदि नाटक में कुछ कमी महसुस हुई तो उस नाटक को वे उपन्यास में परिवर्तित करते थे उन्होंने केवल चार उपन्यासों का लेखन किया है। जिसमें **'तेंदू के पत्ते, चेतना'**, सन १९७१ खजुराहों की अल्का, **धर्मक्षेत्रे-कुरूक्षेत्रे** है सन १९८० इसमें **'तेंदू के पत्ते'** अप्राप्य रचना है। **'बंधन अपने अपने'** की कथा का विस्तारित रुप देकर उन्होंने **'चेतना'** नामक उपन्यास लिखा (सन १९८०) और **'खजुराहों का शिल्पी'** नाटक का रुपांतर **'खजुराहों की अल्का'** नाम से किया है। इसमें माया और मोक्ष के संघर्ष का चित्रण विस्तार से किया गया है। इस उपन्यास के संदर्भ में कहा जा सकता है। कि यही केवल 'शंकर शेष' का उपन्यास है जिसको 'शंकर शेष' को सर्वश्रेष्ठ उपन्यासकार की पंक्ति में खडा करता है। उनका बचपन से ही रामायण, महाभारत के प्रति आकर्षण था इसी आकर्षण की उपज उनका उपन्यास **'धर्मक्षेत्र कुरूक्षेत्र'** यह है इसमें महाभारत कालीन संपूर्ण व्यवस्थापर कडा व्यंग्य किया है।

'डॉ.शंकर शेष' के अन्य सृजन में **हिन्दी और मराठी कहानी का तुलनात्मक अध्ययन** सन १९६१ इसको नागपूर विश्वविद्यालय ने स्वीकृत किया और उन्हे पी-एच.डी. की उपाधि से सन्मानित किया इस शोध प्रबंध में पाँच अध्याय है। दुसरा शोध **छत्तीसगढी का भाषा शास्त्रीय अध्ययन** (१९६५) इस शोध प्रबंध में उनके तीन अध्याय है। यह सन १९६५ का लिखा है। इन्होंने संस्मरण का लेखन भी किया है। जो **'चेहरे'** नाम से है।

समीक्षात्मक लेख इसके अंतर्गत **'अंधेरी नगरी एक दृष्टिकोन', 'सूरदास के काव्य में संयोग श्रृंगार', 'सुरदास के काव्य में वियोग', सुरदास के काव्य का कलापक्ष, विद्यापती के काव्य में राधा, विद्यापती के कृष्ण गीतिकाव्य परम्परा और विद्यापती का सौंदर्यांकन** आदी समिक्षात्मक लेखों का समावेश है 'संकीर्ण' रचना विधा में **'समृध्दि की ओर'** उनका है इसमें **'जे आर डी टाटा'** की जीवनी का अनुवाद जिसके लेखक **'आर एम लाला'** है।

रचनाकार के रुप में अपनी रचना को अपने जीवित छोड सकने की कठिन भूमिका वे लेख ही निभा पाते है। जो समयगत सच्चाइयों से सामना करने मे समर्थ होते है। 'डॉ.शेष' का अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान यही है कि जिस यथार्थ को उन्होंने अपने साहित्य में वाणी दी वह चाहे उनका व्यक्तिगत यथार्थ रहा हो या सामाजिक वह समकालीन यथार्थ भी था यही कारण है। की उनका नाटक साहित्य अपने समय के परिवेश को पार करके भविष्य के सच की ओर संकेत करता है 'डॉ.शंकर शेष' वर्तमान युग के प्रतिभा सम्पन्न, प्रतिष्ठित और प्रसिध्द नाटककार थे उन्होंने साहित्य की विविध विधाओं मे अपनी गहन-अनुभूति का शिल्प कौशल का चिंतन शक्ति का परिचय दिया है अन्य विधाओं की तुलना में उनकी प्रतिभा सबसे अधिक नाटकों द्वारा ही मुखरित हुई 'डॉ.विनय' के अनुसार 'डॉ.शेष' ने अपनी सृजनात्मक प्रतिभा से हिन्दी नाटक को बहुत समृध्द किया है। नाटक एक बहुत कठिण विद्या है प्रसाद, भूवनेश्वर और मोहन राकेश के बाद नाटकों की कालातीत परंपरा को डॉ.शेष ने ही जीवित रखा है। यह उनका नही हिन्दी रंगमंच और साहित्य का सौभाग्य है।

संदर्भ सूची :-

१) शंकर शेष के नाटकों मे शेष-विशेष : डॉ.भुक्तरे बळीराम संभाजी
२) धर्मयुग १५ से २१ नवम्बर १९८१
३) शंकर शेष की नाट्य कला : डॉ.प्रकाश नारायण जाधव
४) शंकर शेष के नाटकों का रंग शिल्प : डॉ.जशवंत भई डी.पंड्या
५) शंकर शेष आधुनिक हिन्दी के प्रतिनिधी नाटककार : डॉ.शमली एम.एम.